युवाओं में श्रद्धा, विश्वास और जागरूकता

पूनम तंवर*

''तोड़ देंगे हम रूढ़ियों को, एक नया जहाँ बनाएँगे, युवा हैं हम भारत के, इसे आगे बढ़ाएँगे, देखेंगे जोर कितना है तूफा की भुजाओं में, तोड़ कर सब बंधनों को हम अमर हो जाएँगे।''

इतना अधिक जोश, इतनी उमंग और इतना उत्साह केवल युवाओं में ही हो सकता है। जोश, उत्साह और उमंग से परिपूर्ण युवाओं को सन्मार्ग पर पग रखने की प्रेरणा देने के लिए अच्छे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। जो इस प्रकार से उनकी मदद करें कि वे भटकाव से बचते हुए अपना जीवन श्रेष्ठ बनाएँ।

शिक्षा

शिक्षा के माध्यम से हम युवाओं को सचेत करेंगे कि यदि उनके साथ या उनके आस-पास अगर कुछ गलत हो रहा हो तो वे उसे अनदेखा न करके उसका विरोध करें और बेझिझक अपनी समस्या को सुलझाने में सक्षम हो तथा दूसरों से साझा कर सके। नैतिक शिक्षा के माध्यम से समाज को जागरूक किया जाना चाहिए, जिससे लोग सही गलत की पहचान कर सकेंगे और युवाओं के विरूद्ध बढ़ते अपराधों में कमी आएगी। शिक्षा अपराधों को रोकने का सही व सार्थक मूल्य है।

संस्कार ही जीवन का आधार

संस्कार ही जीवन के नींव होते हैं। संस्कारों की कमी समाज में बढ़ते अपराधों का प्रमुख कारण है, जिस प्रकार एक श्रेष्ठ कार्य कुल, समाज तथा राष्ट्र को आसमान की ऊँचाईयों तक ले जाता है वहीं एक नीच कार्य पूरे समाज व राष्ट्र को गहरे अंधकार की तरफ धकेल देता है, जहाँ गहरे सन्नाटे के सिवा आशा की कोई किरण नजर नहीं आती। ऐसे में एक अमूल्य वरदान रूपी जीवन भयानक अभिशाप जैसा लगने लगता है। युवाओं का सही मार्गदार्शन करने में संस्कारों का विशेष महत्व है।

कानूनों का सख्ती से पालन

यदि हम और आप वास्तव में चाहते हैं कि अपराध रुक जाएँ तो हमें हमारे समाज तथा सरकार के द्वारा बनाए गए कानूनों का सख्ती से पालन करना होगा। सख्त कानून अपराधियों के मन में डर का कारण बनेगा। जिससे वे कोई भी अपराध करने से पहले हिचकिचाएँगे। यदि कोई भी अपराध होते ही उसके खिलाफ तुरंत कार्यवाही की जाए तो आए दिन होने वाले अपराधों का विरोध किया जा सकता है, उन्हें जड़ से खत्म तो नहीं परंतु कम अवश्य किया जा सकता है। यदि अपराधों को खत्म करने की जिम्मेदारी भारतीय युवाओं को दे दी जाए तो वो दिन दूर नहीं जब भारत एक अपराध मुक्त देश कहलाएगा।

* *प्राचार्या, द हॉरिजन इंटरनैशनल स्कूल, पानीपत, हरियाणा।*

रोजगार

हम सभी जानते हैं कि समाज में व देश में बढ़ती बेरोजगारी है। युवा पीढ़ी शिक्षित होने के बावजूद सही रोजगार न मिलने के कारण भटक रही है। जैसा कि कहा भी गया है ''खाली दिमाग शैतान का घर''। यदि सभी को उनकी योग्यता के अनुसार उचित रोजगार उपलब्ध हो तो युवा भटकाव से बचकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो अपने जीवन को सार्थक करेंगे। ऐसा होने पर वे लिंग भेदभाव के दायरे से बाहर निकलेंगे तथा एक-दूसरे का सम्मान करेंगे। वास्तव में हम ऐसा ही समाज व देश बनाना चाहते हैं।

पुरुषप्रधान समाज

महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों का एक मुख्य कारण हमारा पुरुष प्रधान समाज भी है। कुछ परिवारों में आज भी घरेलू हिंसा होती है। यदि पुरुष प्रधान समाज ये समझे कि महिलाएँ भी समाज का बराबर का हिस्सा हैं और उन्हें भी समाज में बराबर का अधिकार मिलना चाहिए। ऐसा करके हम परिवार समाज व देश को अपराध मुक्त बनाने में अपना सहयोग दे सकते हैं, क्योंकि यदि युवा अपने परिवार में माँ, बहन, बेटी का सम्मान करेंगे व देखेंगे तो उनकी नारी जाति के प्रति कुदृष्टि सम्मानपूर्ण हो जाएगी। यदि ऐसा हुआ तभी हम वास्तविक रूप से अपनी युवा पीढ़ी को एक सुनहरा कल दे पाएँगे।

आत्म-सुरक्षा

यदि स्कूली पाठ्यक्रम में शिक्षा के साथ-साथ आत्मसुरक्षा सम्बंधी शिक्षा को भी शामिल किया जाए तो हम अपनी युवा पीढ़ी को आत्मनिर्भर तथा सही निर्णय लेने योग्य सक्षम बनाने में कामयाबी हासिल कर सकते हैं। यदि युवा वर्ग आत्मनिर्भर होगा तो वो अपने साथ-साथ दूसरों की सुरक्षा का दायित्व भी उठा सकते हैं। यदि युवा वर्ग अपने देश व समाज के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरी निष्ठा व पवित्रता से निभाएगा तो भारत को फिर से विश्व गुरु बना सकता है।

अभिभावकों का योगदान

अभिभावक यदि समय-समय पर अपने बच्चों को उनके लक्ष्य तक पहुँचने में उनकी उचित मदद करें तो उनको उनके लक्ष्य को निर्धारित करने में मदद होगी। वे अपने जीवन की सही दिशा पहचान कर भटकाव से बचेंगे। यदि अभिभावक अपने बच्चों की समस्या को सुनकर उसे दूर करेंगे तो युवा वर्ग हर निर्णय को पहचानने में कारगर सिद्ध होगें।

''बड़ों के विचारों को सुनो और दो सम्मान अनमोल हैं
उनके अनुभव, जो बनाएँगे तुम्हें सबसे महान''

उपसंहार

अगर हमें सही मायने में समाज में बदलाव लाना है तो इस विषय में सिर्फ सरकार पर निर्भर न होकर हम सभी को एकजुट होकर सहयोग करना होगा। तभी हम 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं' के नारे को सार्थक कर पाएँगे और अपने समाज व देश को अपराध मुक्त कर पाएँगे।

****